214hi10

10

आपूर्ति

पिछले अध्याय में हम किसी वस्तु की मांग का अर्थ, मांग के निर्धारकों तथा मांग के नियम के बारे में पढ़ चुके हैं। परन्तु क्रेता किसी वस्तु को तभी खरीद सकेंगे जब वह बाजार में उपलब्ध होगी। इसलिये प्रश्न उठता है कि बाजार में वस्तुओं की आपूर्ति कौन करता है? किसी वस्तु के क्रेता के लिये उपलब्ध होने के लिए पहले उसका उत्पादन होना चाहिये, उचित तरीके से उसका संग्रहण होना चाहिये तथा बाजार तक उसे ढ़ोकर लाया जाना चाहिये। क्या आप कभी किसी कृषि फार्म पर गये हैं? क्योंकि कृषक अपने खेतों में खाद्यान्नों, फलों तथा सब्जियों का उत्पादन करते हैं, वे इन वस्तुओं के उत्पादक हैं। इसी प्रकार उपभोक्ता वस्तुओं जैसे कपड़े, साबुन, टूथ-पेस्ट, टूथ-ब्रुश, जूते, पैन आदि का फैक्ट्रियों में विनिर्माण होता है। इन वस्तुओं के उत्पादक विनिर्माता कहलाते हैं। क्रेता इन वस्तुओं को बाजार में विक्रेताओं से खरीदते हैं। बाजार में मूल उत्पादक तथा विक्रेता एक व्यक्ति अथवा भिन्न-भिन्न व्यक्ति हो सकते हैं। यदि वे भिन्न है तो इसका सीधा अर्थ है कि विक्रेताओं ने इन वस्तुओं को बाजार में क्रेताओं को बेचने के लिये मूल उत्पादकों से प्राप्त किया है। अतः कृषक, विनिर्माताएं तथा विक्रेता बाजार में वस्तुओं की आपूर्ति करते हैं। इन सभी को उत्पादक कहते हैं। वह उत्पादन इकाई जिसमें किसी वस्तु का उत्पादन होता है, फर्म कहलाती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि फर्म वस्तुओं की आपूर्ति करती हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आपः

- स्टॉक तथा आपूर्ति के अर्थ को समझ पायेंगे;
- व्यक्तिगत आपूर्ति तथा बाजार आपूर्ति का अर्थ समझ पायेंगे;
- किसी वस्तु की आपूर्ति के निर्धारकों अथवा आपूर्ति को प्रभावित करने वाल कारकों की व्याख्या कर पायेंगे;
- वस्तु की कीमत तथा उसकी आपूर्ति की मात्रा में संबंध को समझ पायेंगे;
- व्यक्तिगत आपूर्ति वक्र की रचना तथा उसके आकार की व्याख्या कर पायेंगे।

10.1 आपूर्ति का अर्थ

हमें 'बाजार में किसी वस्तु की उपलब्धता' तथा 'उस वस्तु की आपूर्ति में संभ्रमित नहीं होना चाहिये। ये एक समान नहीं होती। यदि कोई वस्तु उपलब्ध भी है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि इसकी आपूर्ति की गई है। आपूर्ति की परिभाषा निम्न है :

किसी वस्तु की आपूति वस्तु की वह मात्रा है जिसे एक विक्रेता निश्चित कीमतों पर प्रति इकाई समय में बेचने को तत्पर है।

आपूर्ति की परिभाषा में निम्नलिखित तीन चीजों को सम्मिलित किया जाता है:

1. वस्तु की मात्रा जो विक्रेता बेचने के लिये तत्पर है।
2. बाजार में दी गई कीमत जिस पर विक्रेता वस्तु की उस मात्रा को बेचने के लिये तत्पर है।
3. समय अवधि जिसमें विक्रेता वस्तु की उस मात्रा को बेचने के लिये तत्पर है।

आपूर्ति के उदाहरण

- गंगा सिंह ने पिछले सप्ताह में अपनी डेयरी से 25 रु. प्रति लीटर कीमत पर 120 लीटर दूध बेचा।
- फल विक्रेता ने पिछले 15 दिनों में 50 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर 600 कि.ग्रा. सेब बेचे।
- एक फर्म 'X' लि. ने एक दिन में 2800 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर 8 क्विंटल चीनी बेची।
- अनाज के व्यापारी ने 2300 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर अगस्त मास में 300 क्विंटल चावल की आपूर्ति की।

इस बात पर ध्यान दें कि समय अवधि भिन्न-भिन्न हो सकती है। यह एक मास , एक सप्ताह अथवा दो सप्ताह तथा इसी प्रकार कोई भी हो सकती है।

10.2 स्टॉक तथा आपूर्ति

एक निश्चित समय बिन्दु पर विक्रेता के पास किसी वस्तु की उपलब्ध मात्रा स्टॉक कहलाती है। दूसरी ओर, **आपूर्ति किसी वस्तु के स्टॉक का वह भाग होती है जो विक्रेता एक दी गई समय अवधि में किसी दी गई कीमत पर बेचने को तत्पर होता है।** इसलिये आपूर्ति एक प्रवाह है। स्टॉक को एक निश्चित समय बिन्दु पर मापा जाता है जबकि आपूर्ति को एक समय अवधि में मापा जाता है। उपर्युक्त उदाहरण को ही लें - अनाज के व्यापारी ने अगस्त माह में 2300 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर 300 क्विंटल चावल की आपूर्ति की। हम यह मान लें कि व्यापारी ने 1 अगस्त 2011 को 820 क्विंटल चावल

प्राप्त किया। यह 1 अगस्त 2011 को स्टॉक था। यहां 1 अगस्त 2011 एक समय बिन्दु है जिस पर स्टॉक को मापा गया है। अगस्त में 2300 रु. कीमत पर 300 क्विंटल की आपूर्ति प्रवाह था। क्योंकि अगस्त में 31 दिन होते हैं, इसे हम समय अवधि कहते हैं जिसमें आपूर्ति को मापा गया है। इन 31 दिनों में व्यापारी ने प्रत्येक दिन कुछ मात्रा बेची जिसे यदि जोड़ दिया जाये तो मास के अन्त में 2300 रु. दी गई बाजार कीमत पर 300 क्विंटल हो जाता है।

अतः आपूर्ति वस्तु के स्टॉक का एक भाग होती है।

पाठगत प्रश्न 10.1

1. आपूर्ति की परिभाषा लिखिये।
2. आपूर्ति की परिभाषा में सम्मिलित किये जाने वाले तीन तत्वों के नाम लिखिये।
3. स्टॉक तथा आपूर्ति में भेद कीजिये।

10.3 व्यक्तिगत आपूर्ति को प्रभावित करने वाले कारक

व्यक्तिगत आपूर्ति को कौन-कौन से कारक प्रभावित करते हैं? सबसे महत्वपूर्ण कारक निम्नलिखित हैं :

- वस्तु की कीमत
- उत्पादन प्रोद्योगिकी
- आगतों की कीमत
- अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत
- फर्म का उद्देश्य
- सरकारी नीति

(i) **वस्तु की कीमत :** वस्तु की कीमत किसी वस्तु की आपूर्ति का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। जब कोई उत्पादक किसी वस्तु का उत्पादन करता है तो वह उत्पादन के साधनों, कच्चे माल आदि पर काफी व्यय करता है जिसे हम उत्पादन की लागत कहते हैं। वह इन लागतों को उत्पाद को निश्चित कीमत पर बाजार में बेच कर पुनः प्राप्त करता है। क्योंकि कीमत औसत आगम भी होती है, अधिक कीमत होने पर औसत आगम भी अधिक होगा तथा तदनुसार कुल आगम भी अधिक होगा। इसलिये कीमत वस्तु की आपूर्ति का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

(ii) **उत्पादन प्रोद्योगिकी :** उत्पादन की प्रोद्योगिकी में सुधार से वस्तु की प्रति इकाई लागत में कमी आती है जिससे फर्म के लाभ में वृद्धि होती है। यह फर्म को इस सुधारी हुई प्रोद्योगिकी का प्रयोग कर वस्तु की अधिक आपूर्ति करने के लिये प्रेरित करती

है। दूसरी ओर, यदि फर्म पुरानी तथा निम्न कोटि की प्रोद्योगिकी का प्रयोग करती है तो इससे वस्तु की प्रति इकाई लागत में वृद्धि होती है जिससे लाभ में कमी आती है, फलस्वरूप वस्तु की आपूर्ति कम हो जाती है।

(iii) **आगतों की कीमत :** मान लीजिये, एक फर्म आइसक्रीम का उत्पादन कर रही है। यदि दूध की कीमत कम हो जाती है तो आइसक्रीम की प्रति इकाई उत्पादन की लागत कम हो जायेगी। इससे प्रति इकाई लाभ में वृद्धि होगी। इसलिये फर्म आइसक्रीम की आपूर्ति में वृद्धि करेगी। दूसरी ओर यदि दूध की कीमत में वृद्धि हो जाती है तो आइसक्रीम की प्रति इकाई उत्पादन की लागत बढ़ जायेगी। इससे लाभ में कमी आयेगी तथा फर्म आइसक्रीम की आपूर्ति कम कर देगी। इस प्रकार यदि किसी वस्तु के उत्पादन में प्रयोग की जाने वाली आगत की कीमत में कमी आती है तो प्रति इकाई उत्पादन लागत कम हो जायेगी तथा फलस्वरूप वस्तु की आपूर्ति बढ़ जायेगी। दूसरी ओर, किसी वस्तु के उत्पादन में प्रयोग की जाने वाली किसी आगत की कीमत में वृद्धि से उत्पादन की प्रति इकाई लागत में वृद्धि हो जाती है और वस्तु की आपूर्ति कम हो जाती है।

(iv) **अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत :** किसी वस्तु की आपूर्ति अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत से भी प्रभावित होती है। मान लें, एक कृषक दिये गये संसाधनों द्वारा दो वस्तुओं, गेहूँ तथा चावल का उत्पादन करता है। यदि चावल की कीमत बढ़ जाती है तो कृषक को चावल का उत्पादन करना अधिक लाभप्रद हो जायेगा। कृषक गेहूँ के उत्पादन में से संसाधनों को हटाकर चावल के उत्पादन में लगा देगा। फलस्वरूप, चावल की आपूर्ति में वृद्धि हो जायेगी तथा गेहूँ की आपूर्ति में कमी आयेगी। दूसरी ओर, चावल की कीमत में कमी से चावल की आपूर्ति में कमी तथा गेहूँ की आपूर्ति में वृद्धि होगी।

(v) **फर्म का उद्देश्य :** विभिन्न फर्मों के विभिन्न उद्देश्य होते हैं। कुछ फर्मों का उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना होता है जब कि कुछ फर्मों का उद्देश्य बिक्री को अधिकतम करना हो सकता है। कुछ अन्य फर्मों का उद्देश्य अपनी प्रतिष्ठा में वृद्धि करना तथा कुछ का उद्देश्य रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना हो सकता है। एक फर्म जिसका उद्देश्य विक्रय में वृद्धि करना है, वह कम कीमत पर भी वस्तु की आपूर्ति अधिक कर सकती है। अतः किसी वस्तु की आपूर्ति फर्म द्वारा किसी उद्देश्य को प्राथमिकता देने तथा एक उद्देश्य को दूसरे उद्देश्य के लिये त्याग करने की तत्परता से प्रभावित होती है।

(vi) **सरकारी नीति :** सरकारी नीति भी किसी वस्तु की आपूर्ति को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिये यदि सरकार किसी वस्तु पर मूल्य वृद्धि कर (वैट) अथवा बिक्री कर की दर को बढ़ा देती है तो इससे उत्पादन की प्रति इकाई लागत में वृद्धि हो जायेगी जिससे वस्तु की आपूर्ति कम हो जायेगी। दूसरी ओर, किसी वस्तु पर कर में कमी से प्रति इकाई उत्पादन लागत में कमी होगी तथा इससे वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि होगी।

10.4 वस्तु की व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची

किसी वस्तु की एक व्यक्तिगत फर्म द्वारा आपूर्ति को व्यक्तिगत आपूर्ति कहते हैं। किसी वस्तु की व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची की रचना करने के लिये हमें विभिन्न कीमतों पर की गई आपूर्ति मात्राओं से सम्बन्धित सूचना की आवश्यकता होती है। इस पाठ में आपूर्ति से सम्बन्धित दिये गये पूर्व के सभी उदाहरणों में हमने किसी वस्तु की केवल एक दी गई अवधि में विशेष कीमत पर आपूर्ति की मात्रा का उल्लेख किया है। हम जानते हैं कि वास्तविकता में वस्तु की कीमत में भी परिवर्तन हो जाता है। अब यदि हम पूछें - क्या होता है यदि किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन हो जाता है? तदनुसार यह आशा की जाती है कि वस्तु की मात्रा में भी परिवर्तन हो जाएगा। आइये, हम एक फर्म X लि. का उदाहरण लें जिसने 2800 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर एक दिन में 8 क्विंटल चीनी का विक्रय किया। मान लीजिये, कीमत बढ़कर 2900 रु. प्रति क्विंटल हो गई। यह देखने में आता है X लि. ने इस कीमत पर एक दिन में 9 क्विंटल चीनी का विक्रय किया। इसी प्रकार, जब कीमत बढ़कर 3000 रु. हो गई तो आपूर्ति की मात्रा बढ़ाकर 10 क्विंटल हो गई। इसके अतिरिक्त कीमत 3100 रु. तथा 3200 रु. पर आपूर्ति की मात्रा बढ़कर क्रमशः 12 तथा 15 क्विंटल हो गई। विभिन्न कीमतों पर आपूर्ति की विभिन्न मात्राओं से सम्बन्धित सूचना को निम्न सारणी 10.1 में दर्शाया गया है।

सारणी 10.1 'X' लि. की चीनी की आपूर्ति

कीमत (रु. प्रति क्विंटल)	चीनी की आपूर्ति की मात्रा प्रति दिन (क्विंटल में)
2800	8
2900	9
3000	10
3100	12
3200	15

किसी वस्तु की विभिन्न कीमतों पर एक फर्म द्वारा की जाने वाली आपूर्ति की विभिन्न मात्राओं के इस प्रकार सारणी के रूप में प्रस्तुतीकरण को व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची कहते हैं।

10.5 आपूर्ति का नियम

अभी हमने कहा था कि किसी वस्तु की आपूर्ति को निर्धारित करने वाले पांच महत्वपूर्ण कारक है - वस्तु की कीमत, अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत, आगतों की कीमत, उत्पादन की प्रोद्योगिकी, सरकारी नीति। इन कारकों में से किसी एक अथवा सभी में

परिवर्तन होने से वस्तु की आपूर्ति में परिवर्तन हो सकता है। मान लजिये, हम उस ढ़ंग को जानना चाहते हैं जिसमें इन कारकों में से किसी एक कारक में परिवर्तन के कारण किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा में परिवर्तन होता है। दूसरे शब्दों में, हम आपूर्ति की मात्रा पर किसी एक कारक में परिवर्तन के प्रभाव को जानने का प्रयास करें। इसे जानने के लिये हमें अन्य सभी कारकों को अपरिवर्तित अथवा स्थिर रखना पड़ेगा। आरम्भ में छः कारकों में से, हम केवल वस्तु की कीमत में परिवर्तन का आपूर्ति की मात्रा पर प्रभाव पर विचार करें। इसे जानने के लिये हमें मानना पड़ेगा कि अन्य कारकों जैसे अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत, आगतों की कीमत, उत्पादन की प्रोद्योगिकी तथा सरकारी नीति आदि स्थिर रहते हैं अथवा इस समय में ये अपरिवर्तित रहते हैं। जब वस्तु की कीमत के अतिरिक्त अन्य सभी कारक स्थिर रहते हैं, कीमत तथा आपूर्ति की मात्रा के बीच संबंध को आपूर्ति के नियम द्वारा व्यक्त किया जाता है।

सारणी 10.1 पर पुनः विचार कीजिये। यह 'X' लि. द्वारा विभिन्न कीमतों पर चीनी की आपूर्ति की मात्राओं को दर्शाती है। सारणी में आप कीमत तथा आपूर्ति की मात्रा से सम्बन्धित केवल दो स्तम्भों को देख सकते हैं। अन्य कारकों से संबंधित कारकों की अनुपस्थिति सूचित करती है कि वे स्थिर रखे गये हैं। आप देख सकते हैं कि चीनी की कीमत जब 3000 रु. प्रति क्विंटल है तो फर्म प्रतिदिन 10 क्विंटल चीनी बेचने को तत्पर है। जब कीमत बढ़कर 3200 रु. प्रति क्विंटल हो जाती है तो यह अधिक अर्थात प्रतिदिन 15 क्विंटल चीनी बेचने को तत्पर है। दूसरी ओर, जब चीनी की कीमत कम होकर 2800 रु. प्रति क्विंटल हो जाती है तो यह कम अर्थात 8 क्विंटल चीनी प्रतिदिन बेचने को तत्पर है। इससे अभिप्राय है कि फर्म अधिक कीमत पर वस्तु की अधिक तथा कम कीमत पर उसकी कम आपूर्ति करती है। हम इसका नियम के रूप में निम्नलिखित ढ़ंग से उल्लेख कर सकते हैं।

आपूर्ति को निर्धारित करने वाले अन्य कारकों के स्थिर रहने पर वस्तु की कीमत तथा आपूर्ति की मात्रा में प्रत्यक्ष संबंध होता है।

आपूर्ति का नियम सारणी 10.2 में दिये गये एक अन्य उदाहरण की सहायता से भी समझाया जा सकता है।

सारणी 10.2 मोहन द्वारा आमों की आपूर्ति

आमों की कीमत (रु. प्रति कि.ग्रा.)	आमों की आपूर्ति की मात्रा प्रतिदिन (कि.ग्रा. में)
20	100
30	200
40	300
50	400
60	500

सारणी 10.2 में आमों के एक विक्रेता मोहन द्वारा विभिन्न कीमतों पर आमों की विभिन्न आपूर्ति की मात्राओं को दिखाया गया है। जब आमों की कीमत 20 रु. प्रति कि.ग्रा. है तो मोहन प्रतिदिन 100 कि.ग्रा. आमों की आपूर्ति करता है। जब कीमत बढ़कर 40 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है तो वह 300 कि.ग्रा. आमों की आपूर्ति करने को तत्पर है तथा इसी प्रकार। अतः जैसे-जैसे आमों की कीमत बढ़ती है, आमों की आपूर्ति की मात्रा भी बढ़ती है। यह आपूर्ति के नियम के अनुसार ही है।

10.6 आपूर्ति वक्र

सारणी 10.2 में दी गई सूचना को चित्र द्वारा भी प्रदर्शित किया जा सकता है। **आपूर्ति के नियम की चित्र के रूप में प्रस्तुति आपूर्ति वक्र कहलाता है।** अतः आपूर्ति वक्र प्रति इकाई समय में विभिन्न कीमतों पर किसी वस्तु की आपूर्ति की विभिन्न मात्राओं को चित्र के रूप में प्रदर्शित करता है।

हम सारणी 10.2 में दी गई सूचना की सहायता से एक व्यक्तिगत आपूर्ति वक्र की रचना कर सकते हैं। आपूर्ति वक्र चित्र 10.1 में बनाया गया है।

आमों की आपूर्ति की विभिन्न मात्राओं को X-अक्ष पर तथा आमों की कीमत को Y-अक्ष पर लें। Y-अक्ष (उर्ध्वाधर) पर कीमतों को 20 रु. से आरम्भ करके 60 रु. तक अंकित किया गया है। X-अक्ष (क्षैतिज) पर आमों की मात्राओं को 100 से आरम्भ करके 500 कि.ग्रा. तक अंकित किया गया है। मोहन ने 20 रु. पर 100 कि.ग्रा. आमों की आपूर्ति की है। चित्र 10.1 में दिये गये ग्राफ में इस संयोग को बिन्दु A से प्रदर्शित किया गया है। इसी प्रकार सारणी 10.2 में आमों की कीमत तथा आपूर्ति के अन्य संयोगों को B, C, D, E तथा F बिन्दुओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन बिन्दुओं को मिलाकर मोहन का आमों का आपूर्ति वक्र प्राप्त किया गया है।

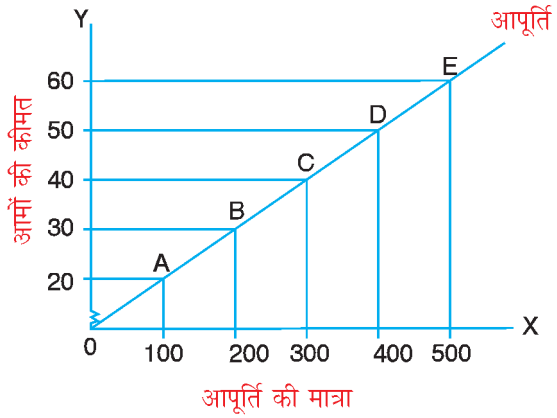

चित्र 10.1 आपूर्ति वक्र

10.7 आपूर्ति वक्र की आकृति

आपूर्ति के नियम के अनुसार जब आपूर्ति के निर्धारित करने वाले अन्य कारक स्थिर रहते हैं तो कोई फर्म किसी वस्तु की अधिक कीमत पर वस्तु की अधिक तथा कम कीमत पर उसकी कम मात्रा में बिक्री करने को तत्पर होती है। वस्तु की कीमत तथा आपूर्ति की मात्रा में इस प्रत्यक्ष संबंध के कारण आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर ढाल वाला होता है। इससे अभिप्राय है कि आपूर्ति वक्र जो चित्र में एक सीधी रेखा की भांति दिखाई पड़ता है, मूल बिन्दु के समीप के एक बिन्दु से आरम्भ होता है तथा फिर दाहिनी ओर ऊपर की ओर जाता है। अब प्रश्न उठता है कि कोई फर्म किसी वस्तु की अधिक कीमत पर अधिक तथा कम कीमत पर उसकी कम मात्रा में आपूर्ति क्यों करती है? अर्थात आपूर्ति वक्र का ऊपर की ओर ढ़ाल क्यों होता है? आपूर्ति वक्र के ऊपर की ओर ढालू होने के लिए निम्नलिखित कारक उत्तरदायी हैं :

(i) वस्तु की कीमत में वृद्धि से लाभ में वृद्धि होती है, फलस्वरूप फर्म लाभ में वृद्धि करने के लिये वस्तु का अधिक मात्रा में उत्पादन करने के लिये प्रेरित होती है।

(ii) वस्तु की कीमत में वृद्धि विक्रेता को अपने स्टॉक का कम से कम एक भाग बेचने के लिये प्रेरित करती हे। जब वस्तु की कीमत में कमी होती है तो इसके विपरीत होता है।

(iii) वस्तु की कीमत में वृद्धि होने के कारण अधिक लाभ नई फर्मों को बाजार में प्रवेश करने के लिये आकर्षित करता है। इससे आपूर्ति में और वृद्धि होती है जिससे अधिक कीमत पर अधिक मात्रा में वस्तु की आपूर्ति होती है।

पाठगत प्रश्न 10.2

1. नीचे दिये गये आंकड़ों के आधार पर आपूर्ति वक्र की रचना कीजियेः

कीमत (रु. प्रति इकाई)	1	2	3	4	5
आपूर्ति की मात्रा (इकाईयों में)	50	100	150	200	250

2. सारणी 10.1 का प्रयोग करके आपूर्ति वक्र बनाइये।

10.8 वस्तु की बाजार आपूर्ति

बाजार में चीनी की आपूर्ति करने वाली 'X' लि. ही अकेली फर्म नहीं है। बाजार में चीनी की आपूर्ति करने वाली कुछ अन्य फर्में भी हो सकती हे। बाजार में सभी फर्मों द्वारा एक साथ चीनी की आपूर्ति की मात्रा जानने के लिये हमें केवल प्रचलित कीमत तथा समय अवधि में व्यक्तिगत मात्राओं को जोड़ना पड़ता है। परिणाम में प्राप्त मात्रा चीनी की बाजार आपूर्ति कहलाती है।

अतः **बाजार में दी गई कीमत पर दी गई समय अवधि में सभी फर्मों द्वारा वस्तु की आपूर्ति की कुल मात्रा उस वस्तु की बाजार आपूर्ति कहलाती है।**

उदाहरण

मान लीजिये, बाजार में चीनी की आपूर्ति करने वाली X, Y तथा Z तीन फर्में हैं। 2800 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर X, Y तथा Z ने एक दिन में क्रमशः 8, 10 तथा 15 क्विंटल चीनी की आपूर्ति की। इन मात्राओं को जोड़ने पर हमें 33 प्राप्त होता है। अतः 2800 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर चीनी की बाजार आपूर्ति 33 क्विंटल प्रति दिन है।

10.9 वस्तु की बाजार आपूर्ति अनुसूची

व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची की भांति किसी वस्तु की बाजार आपूर्ति अनुसूची विभिन्न कीमतों पर बाजार में सभी फर्मों द्वारा की गई आपूर्ति की मात्राओं का योग होती है। हम देख चुके हैं कि एक व्यक्तिगत फर्म/विक्रेता की स्थिति में, आपूर्ति के नियम के अनुसार, जब वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है तो उसकी आपूर्ति की मात्रा में वृद्धि हो जाती है तथा जब कीमत में कमी होती है तो आपूर्ति की मात्रा में कमी हो जाती है। इसी प्रकार, बाजार में अन्य सभी फर्म/विक्रेता भी अपनी-अपनी मात्राओं में वृद्धि अथवा कमी कर देंगे। तदनुसार, बाजारमें सभी फर्मों की आपूर्ति एक साथ लेने पर विभिन्न कीमतों पर आपूर्ति की विभिन्न मात्राएं होंगी।

चीनी की आपूर्ति के उदाहरण को जारी रखें। सारणी 10.3 में दी गई चीनी की आपूर्ति अनुसूची का अध्ययन करें।

सारणी 10.3 चीनी की बाजार आपूर्ति

कीमत (रु. प्रति क्विंटल)	चीनी की आपूर्ति की मात्रा प्रति दिन (क्विंटल में)			चीनी की बाजार आपूर्ति (क्विंटल में)
	फर्म X	फर्म Y	फर्म Z	
2800	8	10	15	33
2900	9	11	16	36
3000	10	12	17	39
3100	12	14	20	46
3200	15	17	25	57

आप सारणी 10.3 में देख सकते हैं कि चीनी की कीमत जब 2800 रु. प्रति क्विंटल है तो प्रतिदिन फर्म X 8 क्विंटल, फर्म Y 10 क्विंटल तथाा फर्म Z 15 क्विंटल चीनी की आपूर्ति करती है। अतः 2800 रु. प्रति क्विंटल कीमत पर चीनी की बाजार

आपूर्ति 8 + 10 + 15 = 33 क्विंटल प्रतिदिन है। जब कीमत परिवर्तित होकर 2900 रु. हो गई तो X, Y तथा Z की आपूर्ति क्रमशः 9, 11 तथा 16 क्विंटल थी जो 36 क्विंटल होता है। अतः 2900 रु. प्रति क्विंटल पर चीनी की बाजार आपूर्ति 36 क्विंटल थी। इसी प्रकार आप सारणी में क्रमशः 3000 रु. 3100 रु. तथा 3200 रु. कीमतों पर चीनी की व्यक्तिगत बाजार आपूर्ति देख सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 10.3

1. यदि बाजार में किसी वस्तु की आपूर्ति करने वाली अ, ब तथा स केवल तीन फर्में हैं, इनकी नीचे दी गई आपूर्ति अनुसूचियों की सहायता से वस्तु की बाजार आपूर्ति ज्ञात कीजियेः

कीमत (रु. प्रति इकाई)	आपूर्ति की मात्रा (इकाईयों में)			बाजार आपूर्ति (इकाईयों में)
	फर्म अ	फर्म ब	फर्म स	
100	1000	1500	2000	–
200	2000	2000	3000	–
300	3000	2500	4000	–
400	4000	3000	5000	–
500	5000	3500	6000	–

2. निम्नलिखित सारणी को पूरा कीजिये (यह मानते हुए कि बाजार में क, ख तथा ग केवल तीन फर्में हैं)

कीमत (रु. प्रति इकाई)	आपूर्ति की मात्रा (इकाईयों में)			बाजार आपूर्ति (इकाईयों में)
	फर्म अ	फर्म ब	फर्म स	
10	150	–	200	650
11	200	–	300	1000
12	250	–	400	1350
13	300	–	500	1700
14	350	–	600	2050

टिप्पणी

10.10 बाजार आपूर्ति को निर्धारित करने वाले कारक

वे सभी कारक जो किसी वस्तु की व्यक्तिगत आपूर्ति को प्रभावित करते हैं उसकी बाजार आपूर्ति को भी प्रभावित करते हैं। इन कारकों के अतिरिक्त किसी वस्तु की बाजार आपूर्ति निम्नलिखित दो कारकों से भी प्रभावित होंती है:

- विक्रेताओं/फर्मों की संख्या
- संभावित भावी कीमत

(i) **विक्रेताओं/फर्मों की संख्या :** बाजार आपूर्ति बाजार में सभी व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूचियों का योग होती है। चीनी की बाजार अनुसूची को दर्शाने वाली सारणी 10.2 पर विचार कीजिये। बाजार में चीनी की आपूर्ति करने वाली X, Y तथा Z तीन फर्में हैं। अब मान लीजिये एक और फर्म W भी बाजार में प्रवेश कर चीनी की आपूर्ति करना आरम्भ कर देती है। चीनी की बाजार आपूर्ति का क्या होगा? चीनी की बाजार आपूति में वृद्धि हो जाएगी। अतः यह स्पष्ट है कि यदि फर्मों की संख्या में वृद्धि हो जाती है तो बाजार आपूर्ति में भी वृद्धि हो जाएगी। दूसरी ओर, यदि फर्मों की संख्या में कमी होती है तो बाजार आपूर्ति में भी कमी हो जाएगी।

(ii) **संभावित भावी कीमत :** यदि निकट भविष्य में किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने की संभावना है तो फर्म भविष्य में कीमत बढ़ने के कारण अधिक लाभ की आशा में वर्तमान में वस्तु की कम मात्रा की आपूर्ति करेगी। लेकिन यदि निकट भविष्य में वस्तु की कीमत में कमी होने की संभावना है तो फर्म भविष्य में कम लाभ की आशा में वर्तमान में वस्तु की अधिक मात्रा की आपूर्ति करेगी।

पाठगत प्रश्न 10.4

1. उपयुक्त शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये:

   (i) किसी वस्तु की आपूर्ति में ..... जब उसकी कीमत में वृद्धि होती है।

   (ii) एक फर्म जिसका उद्देश्य अपने लाभों को अधिकतम करना है, अधिक कीमत पर वस्तु की ..... मात्रा की आपूर्ति करेगी।

   (iii) यदि एक फर्म दिये गये संसाधनों द्वारा दो वस्तुओं X तथा Y का उत्पादन करती है तथा यदि वस्तु Y की कीमत में कमी हो जाती है तो वस्तु X की आपूर्ति में ..... हो जाएगी।

   (iv) मजदूरी दर में कमी होने पर किसी वस्तु की आपूर्ति में ..... हो जाएगी।

(v) टी.वी. के उत्पादन पर उत्पादन कर में वृद्धि होने से टी.वी. की आपूर्ति में ..... हो जाएगी।

2. किसी वस्तु की आपूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ेगा, जब
   (i) वस्तु के उत्पादन में प्रयोग किये जाने वाले कच्चे माल की कीमत में वृद्धि हो जाती है।
   (ii) वस्तु की आपूर्ति करने वाली एक और नई फर्म अस्तित्व में आ जाती है।
   (iii) उत्पादन की प्रोद्योगिकी में उन्नति हो जाती है।
3. यदि स्टेनलैस स्टील की कीमतों में कमी हो जाए तो स्टेनलैस स्टील के बर्तनों की आपूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

आपने क्या सीखा

- किसी वस्तु की आपूर्ति उस वस्तु की वह मात्रा है जो एक विक्रेता/फर्म प्रति इकाई समय में दी गई कीमत पर बेचने को तत्पर है।
- किसी विशेष समय बिन्दु पर किसी विक्रेता/फर्म के पास किसी वस्तु की उपलब्ध कुल मात्रा स्टॉक कहलाती है। आपूर्ति स्टॉक का वह भाग होती है जिसे विक्रेता दी गई समय अवधि में दी गई कीमत पर बेचने को तत्पर है।
- व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची किसी वस्तु की उन आपूर्ति की मात्राओं को प्रदर्शित करती है जो एक व्यक्तिगत फर्म विभिन्न कीमतों पर बेचने को तत्पर है।
- व्यक्तिगत आपूर्ति वक्र को व्यक्तिगत आपूर्ति अनुसूची से प्राप्त किया जाता है।
- बाजार आपूर्ति किसी वस्तु की वह कुल मात्रा है जिसे बाजार में सभी फर्म दी गई समय अवधि में तथा दी गई कीमतों पर बेचने के लिये तत्पर हैं।
- व्यक्तिगत आपूर्ति के निर्धारक हैं - वस्तु की कीमत, अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत, उत्पादन की प्रोद्योगिकी में परिवर्तन, आगतों की कीमतों में परिवर्तन, फर्म का उद्देश्य तथा सरकारी नीति।
- बाजार आपूर्ति के निर्धारक हैं - व्यक्तिगत आपूर्ति के निर्धारकों के अतिरिक्त वस्तु की आपूर्ति करने वाली फर्मों की संख्या, संभावित भावी कीमत।
- आपूर्ति के नियम के अनुसार, आपूर्ति को निर्धारित करने वाले अन्य कारक स्थिर रहने पर वस्तु की कीमत तथा आपूर्ति की मात्रा में प्रत्यक्ष संबंध होता है।
- आपूर्ति वक्र आपूर्ति के नियम की चित्र के रूप में प्रस्तुति है।
- आपूर्ति के नियम के अनुसार किसी वस्तु का आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर ढालू होता है।

पाठन्त प्रश्न

1. आपूर्ति की परिभाषा लिखिये। व्यक्तिगत आपूर्ति तथा बाजार आपूर्ति में भेद कीजिये।
2. किसी वस्तु की व्यक्तिगत आपूर्ति को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या कीजिये।
3. बाजार आपूर्ति के तीन निर्धारकों की संक्षेप में व्याख्या कीजिये।
4. एक उपयुक्त उदाहरण की सहायता से स्टॉक तथा आपूर्ति में भेद कीजिये।
5. एक संख्यात्मक उदाहरण का प्रयोग करते हुए आपूर्ति के नियम का उल्लेख कीजिये।
6. आपूर्ति वक्र क्या है? एक काल्पनिक आपूर्ति अनुसूची की सहायता से व्यक्तिगत आपूर्ति वक्र की रचना कीजिये।
7. आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर ढालू क्यों होता है?
8. आपूर्ति के नियम के क्या कारण हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

पाठगत प्रश्न 10.1

1. आपूर्ति से अभिप्राय किसी वस्तु की उस मात्रा से है जो विक्रेता प्रति इकाई समय में विभिन्न कीमतों पर बेचने को तत्पर है।
2. वस्तु की कीमत, आपूर्ति की मात्रा तथा समय अवधि
3. स्टॉक वस्तु की वह कुल मात्रा है जो किसी विशेष समय बिन्दु पर फर्म के पास उपलब्ध है।

   आपूर्ति स्टॉक का वह भाग है जो विक्रेता प्रति इकाई समय में विभिन्न कीमतों पर बेचने के लिये तत्पर है।

पाठगत प्रश्न 10.3

1. 4500, 7000, 9500, 12000, 14,500
2. 300, 500, 700, 900, 1100

पाठगत प्रश्न 10.4

1. (i) वृद्धि होती है

(ii) अधिक

(iii) वृद्धि

(iv) वृद्धि

(v) कमी

2. (i) वस्तु की आपूर्ति कम हो जायेगी।

(ii) वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि हो जायेगी।

(iii) वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि हो जायेगी।

3. स्टेनलैस स्टील के बर्तनों की आपूर्ति में वृद्धि हो जायेगी।